बुद्धवर्ष २५५०, चैत्र पूर्णिमा, २ अप्रेल, २००७ वर्ष ३६ अंक १०

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

यं किञ्चि रतनं लोके, विज्जति विविधा पुथु।
रतनं धम्मसमं नत्थि, तस्मा सोत्थि भवन्तु ते॥

– महाजयमंगलगाथा - १७.

लोक में जो विविध प्रकार के रत्न हैं, उनमें से कोई भी धर्म-रत्न जैसा नहीं है। इस सत्य से तुम्हारी स्वस्ति हो!

पुक्कुसाति कथा–(३)

हुई मित्रता फलवती

नगर के बाहर भार्गव कुंभकार(कुम्हार) का एक छोटा-सा मकान। कुंभकार को बर्तन, भांडे बनाने के लिए बहुत-सी मिट्टी की आवश्यकता होती है, अतः नगर के बाहर जहां ऐसी सुविधा हो, वहीं उसका निवास होना स्वाभाविक है। हम नहीं जानते कि भार्गव इस कुंभकार का नाम है अथवा गोत्र, जिसके कारण वह इस संबोधन से पुकारा जाता है। हो सकता है जैसे आज कुंभकार को प्रजापति के नाम से पुकारते हैं, उसी प्रकार उन दिनों भार्गव नाम से पुकारते हों; क्योंकि पुरातन साहित्य में हमें एक से अधिक भार्गव कुंभकारों के उल्लेख मिलते हैं।

जो भी हो, यह भार्गव कुम्हार अत्यंत श्रद्धालु है। साधु-संतों की सेवा-टहल और सत्संग में रुचि रखता है। उनकी सुख-सुविधा के लिए अपने घर के समीप एक विश्रामशाला बना रखी है, जो कि कुंभकारशाला के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें यात्री साधु-संन्यासी, एक दो दिन के लिए टिकते रहते हैं। कभी भगवान बुद्ध और कभी सारिपुत्त आदि, उनके शिष्य भी रैनबसेरे के लिए इस कुंभकार की विश्रामशाला में रुके हैं। आज भी भगवान बुद्ध सूरज ढलने के बाद इस कुंभकार के पास आये हैं और उससे पूछते हैं – "भार्गव कुंभकार, मैं तुम्हारी अतिथिशाला में रात बिताऊं? तुम्हें बोझ तो नहीं लगेगा?"

"नहीं, भंते भगवान, मेरे लिए तो यह असीम पुण्य की बात होगी। कुंभकारशाला का कक्ष बहुत बड़ा है। उसमें एक साथ एक से अधिक लोग आराम से टिक सकते हैं। परंतु अभी कुछ देर पहले मैंने एक श्रमण को वहां टिकने की अनुमति दे दी है। उसे पूछ लें। उसे एतराज़ न हो तो भगवान सुखपूर्वक रहें।"

भगवान कुंभकारशाला में गये। देखा, वहां फटे चीवर पहने एक श्रमण बैठा है। गौर वर्ण है, उन्नत ललाट है, बड़ी आंखें हैं, लंबी नाक है। सिर और मूंछ-दाढ़ी के कटे हुए बाल दो-दो अंगुल बढ़े हुए हैं। योद्धाओं का-सा चौड़ा सीना है। सबल सुडौल हाथ-पांव हैं। सब मिला कर बड़ा भव्य व्यक्तित्त्व है। भगवान उसे देख कर मुस्कराये। उन्होंने पूछा, "भिक्षु, इस कक्ष में मैं तुम्हारे साथ एक रात गुजार लूं? तुम्हें बोझ तो नहीं लगेगा?"

"नहीं, आयुष्मान, जरा भी नहीं। कुंभकारशाला का यह कक्ष बहुत बड़ा है। बड़ी खुशी से यहां रात बिताओ। मुझे तो पालथी मार कर बैठने भर का स्थान चाहिए। तुम यहां यथासुख रहो।"

तृण का आसन बिछा कर भगवान एक ओर बैठ गये और ध्यान-मग्न हो गये। पूर्वागत भिक्षु भी ध्यान में बैठ गया और शीघ्र ही चौथी ध्यान-समापत्ति में समाधिस्थ हो गया।

शनैः शनैः रात बीतती गयी। रात्रि का प्रथम याम बीता, द्वितीय याम बीता, अब तीसरा बीत रहा था। पूर्णिमा थी। आकाशसारी रात चंद्रप्रभा से प्रभासित रहा। धरती के आंगन पर चांदनी छिटकी रही। खुली खिड़कियों से चांदनी का प्रकाश कक्ष में भी प्रवेश पा रहा था। भगवान बुद्ध और भिक्षु को चंद्र-किरणें स्पर्श कर रही थीं। भगवान तो बोधिरश्मि से स्वयं प्रभास्वर थे ही, भिक्षु का चेहरा भी ध्यान-समापत्ति की प्रभा से प्रदीप्त था। चांद की शुभ्र ज्योत्सना उन दोनों के चेहरों को और अधिक उजला कर रही थी। भिक्षु देर तक बिना हिले-डुले अधिष्ठान आसन में बैठा रहा। तीसरे याम के दौरान उसने आंखें खोलीं। भगवान ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराये। उन्होंने पूछा,

– "भिक्षु, तुम किस पर आश्रित होकर गृहत्यागी हुए हो? कौन तुम्हारा शास्ता है, आचार्य है? किसके द्वारा उपदेशित धर्म तुम्हें रुचिकर है?"

भिक्षु ने उत्तर दिया,

– "आयुष्मान लोक में सम्यक संबुद्ध उत्पन्न हुए हैं, जिनकी कीर्ति चारों ओर फैली है। मैं उन्हीं शाक्यमुनि भगवान गौतम बुद्ध का आश्रय ले कर घर से बेघर हुआ हूं। वही मेरे शास्ता हैं। उन्हीं का उपदेशित धर्म मुझे रुचिकर लगता है।"

भगवान फिर मुस्कराये। उन्होंने पूछा,

– "भिक्षु, क्या तुमने अपने शास्ता को कभी देखा है? क्या देख लो तो पहचान पाओगे?"

"नहीं, आयुष्मान! नहीं पहचान पाऊंगा। मैंने उन्हें कभी नहीं देखा।"

"इस समय तुम्हारे शास्ता कहां हैं?"

"यहां आने पर पता चला कि वे श्रावस्ती के जेतवन में विहार कर रहे हैं। रास्ते में मैं जेतवन विहार के सामने से गुजरा, पर तब तो समझता था कि उन्हें मगध में संबोधि मिली है, अतः

मगध में ही विहार कर रहे हैं। अब उनसे मिलने के लिए पुनः पैंतालीस योजन श्रावस्ती की ओर लौटना होगा।"

भगवान फिर मुस्कराये। उन्होंने अपने बोधिचित्त से देखा कि भिक्षु का आयुष्य बहुत थोड़ा बचा है। सूर्योदय के कुछ समय बाद उसकी शरीर-च्युति हो जायगी। मेरे निमित्त ही यह प्रव्राजित हुआ है। बहुत योग्य पात्र है। अनेक जन्मों की पुण्य पारमिताओं का धनी है। विपश्यना सिखायी जाय तो अभी विमुक्ति की ऊंची अवस्थाएं प्राप्त कर लेगा। अतः उन्होंने बड़े करुणचित्त से कहा,

–"तो भिक्षु ध्यान लगा कर सुनो! मैं तुझे धर्म देशना देता हूं।"

ऐसा आकर्षण था भगवान की करुणासिक्त वाणी में कि भिक्षु ना न कर सका। उसने कहा, "बहुत ठीक आयुष्मान!" और दत्तचित्त होकर उनकी कल्याणी वाणी सुनने लगा।

पूर्व जन्मों के अभ्यास के कारण स्वर्णपत्र पर आनापान की साधना का वर्णन मात्र पढ़ कर वह स्वतः चौथी ध्यान-समापत्ति की अनुभूति तक पहुँच चुका था। भगवान ने अब उसे धातुओं के विभंग को समझाते हुए विपश्यना की गहराइयों में उतारा।

पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश –ये पांच भौतिक तत्त्व हैं और विज्ञान, यह एक मानसिक तत्त्व। इन छह तत्त्वों का समुच्चय ही मनुष्य है। इन छहों को विभाजित करके ,इनकी धातु यानी इनके धर्म-स्वभाव को अनुभूतियों के स्तर पर जान लेना धातु विभंग है। इन छह तत्त्वों के अतिरिक्त आंख, कान, नाक ,जीभ, त्वचा और विज्ञान (मानस) की छह इंद्रियां और इनके अपने-अपने विषयों के संस्पर्श से उत्पन्न होने वाली सुखद-दुःखद अथवा असुखद-अदुःखद संवेदनाओं की अठारह प्रकार की अनुभूतियों में विचरण करते रहने वाले स्वभाव को विभाजित कर-कर के देख लेना, इन्हें **मैं, मेरा** और **मेरी आत्मा** न मान कर मिथ्या अहं की भ्रम-भ्रांतिजनक मरीचिका से मुक्त होना, मिथ्या मान्यताओं की गुलामी से छुटकारा पाना, यही विपश्यना की विभंग साधना है। इस साधना द्वारा निरंतर अनित्यबोधिनी संप्रज्ञा में सतत अधिष्ठित रहना यानी स्थितप्रज्ञ बने रहना, इंद्रिय जगत के अनित्य और इंद्रियातीत के नित्य स्वभाव वाली सच्चाइयों को स्वानुभूति से जान कर सत्य में सतत अधिष्ठित रहना, मिथ्या अहंभाव से उत्पन्न राग-द्वेष और मोह जैसे विकारों के त्याग में सतत अधिष्ठित रहना और विकारविमुक्ति द्वारा प्राप्त चित्त की शांति में अधिष्ठित रहना, यही धातुविभंग उपदेश के चार प्रमुख उद्देश्य हैं।

भगवान जैसे-जैसे इस उपदेश की बारीकियों को समझाते गये, वैसे-वैसे पुक्कुसाति लोकीय ध्यान को संप्रज्ञान के साथ जोड़ कर लोकोत्तर ध्यानों में बदलता गया और अब उसकी समाधि केवल ध्यान-समापत्तियों तक ही सीमित नहीं रही। संप्रज्ञान की विपश्यना द्वारा अधोगति के संपूर्ण संस्कारों का क्षय करके उसने पहले स्रोतापत्ति की निर्वाणिक फल-समापत्ति को अनुभूति पर उतारा और तदनंतर सकृदागामी की फल-समापत्ति को।

भगवान समझाये जा रहे थे और साथ-साथ मैत्रीधातु, धर्मधातु और निर्वाणधातु से सारे वातावरण को आप्लावित किये जा रहे थे। श्रद्धालु पुक्कुसाति केवल सुनता ही नहीं जा रहा था, भीतर ही भीतर विपश्यना प्रज्ञा द्वारा घनीभूत सच्चाइयों का छेदन-भेदन करता हुआ, बाकी बचे कर्मसंस्कारोंका उच्छेदन भी करता जा रहा था।

रजनीकांत निशाकर अपनी रजत-रश्मियां समेटता हुआ पश्चिमी क्षितिज की ओर अस्त हो रहा था। भुवन-भास्कर अपनी स्वर्ण-रश्मियों को विकीर्ण करता हुआ पूर्वी क्षितिज से उदय हो रहा था। इसी समय पुक्कुसाति भगवान की महाकारुणिक धर्मतरंगों का संबल प्राप्त करता हुआ, विपश्यना की सूक्ष्म गहराइयों की ओर अग्रसर हो रहा था। एकाएक उसे चौथे ध्यान की समापत्ति के साथ-साथ प्रथम निरोध समापत्ति की निर्वाणिक अनुभूति हुई। वह अनागामी-फल लाभी हुआ।

इस निरोधसमापत्ति से उठा तो कृतज्ञता विभोर हो गया। ऐसी मुक्तिदायिनी विपश्यना भगवान बुद्ध के अतिरिक्त और कोई नहीं सिखा सकता। अवश्य यह भगवान बुद्ध ही हैं। यह विचार मन में आते ही उसके मुँह से हर्ष के उद्गार निकल पड़े।

"अहो! मैंने अपना शास्ता पा लिया, सुगत पा लिया, सम्यक संबुद्ध पा लिया।" यह कहते हुए पुक्कुसाति ने अपना सिर भगवान के चरणों में झुका दिया। फिर दाहिने कंधे को खुला छोड़ कर अपने उत्तरासंग को यानी ऊर्ध्व वस्त्र को बाएं कंधे पर रखते हुए (यह उन दिनों का सम्मान प्रदर्शन था), हाथ जोड़ कर बोला –

"भंते भगवान! अनजाने में मुझसे बहुत बड़ा अपराध हुआ। मैं अपनी अज्ञान अवस्था में, मूढ़ अवस्था में आपको पहचान नहीं पाया, इसलिए आपको आयुष्मान शब्द से संबोधित करके मैंने अत्यंत अकुशल कर्म किया। (पद अथवा उम्र में अपने से छोटों के लिए आयुष्मान शब्द प्रयुक्त हुआ करता था।) भगवान मेरे इस अपराध को क्षमा करें। भविष्य में मुझसे ऐसी भूल नहीं होगी।"

"भिक्षु, अनजाने में की हुई अपनी भूल तुमने स्वीकारी है। इसका उचित प्रतिकार किया है। आर्य धर्म-विनय में यह प्रगति का लक्षण है, जबकि कोई अपनी भूल स्वीकारता है, उसका प्रतिकार करता है और भविष्य में न करने का संकल्प करता है।"

"भगवान, मुझे आप से उपसंपदा मिले।"

"भिक्षु, क्या तुम्हारे पास परिपूर्ण पात्र-चीवर हैं?"

"नहीं भंते, परिपूर्ण नहीं हैं।"

"भिक्षु, अपूर्ण पात्र-चीवर वाले को तथागत उपसंपदा नहीं देते।"

तब आयुष्मान पुक्कुसाति भगवान के वचन का अभिनंदन कर, आसन से उठा और उनका अभिवादन कर, उनकी प्रदक्षिणा की और पात्र-चीवर की खोज में नगर की ओर चल पड़ा।

सूर्योदय होते ही नगरद्वार खुले। नगर के कुछ एक नागरिक और भिक्षु बाहर आये तो भार्गव कुम्हार की अतिथिशाला में अप्रत्याशित रूप से भगवान को बैठे देखा। उन्होंने भगवान का सादर अभिवादन किया। कुछ लोग दौड़े हुए महाराज बिंबिसार के पास पहुँचे। वह भी शीघ्रतापूर्वक भगवान की सेवा में आ गया। भगवान को पंचांग प्रणाम कर भार्गव कुम्हार की अतिथिशाला में बैठ गया।

इतने में सूचना आयी कि पात्र-चीवर की खोज में निकला हुआ भिक्षु एक दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त हो गया है।

भगवान ने बताया कि यह व्यक्ति गंधारनरेश था, जो कि अपने मित्र का धर्मसंदेश पाकर, राजपाट त्याग कर प्रव्रजित होने

मगध चला आया था। पुक्कुसाति समझदार था। वह परम सत्यान्वेषी था। शुद्ध धर्म को जैसे-जैसे सुनता गया, वैसे-वैसे स्थूल से सूक्ष्म सत्यों की ओर अग्रसर होता हुआ, मुक्ति की ओर बढ़ता चला गया। धर्म को समझने और धारण करने में उसमें कोई हेठी नहीं दिखायी दी। कोई अड़ियलपन नहीं दिखायी दिया। आज की रात ही उसने विपश्यना साधना द्वारा अनागामी फल प्राप्त किया, जिससे उसके सारे अवरभागीय संयोजन-बंधन टूट गये। अब वह ओपपातिक ब्रह्मलोक में जन्मा है। वहां विपश्यना करते हुए अरहत फल प्राप्त कर लेगा और वहीं शरीर त्यागने पर परिनिर्वाणलाभी होकर समस्त लोकों के भवभ्रमण से सर्वथा विमुक्त हो जायगा।

बिंबिसार अपने अनदेखे मित्र की मृत्यु के संवाद से दुःखी तो हुआ, पर शीघ्र ही उसका यह दुःख मोद में पलट गया, जबकि उसने यह सुना कि उसका मित्र अनागामी फल प्राप्त कर मृत्यु को प्राप्त हुआ है। उसे लगा कि उसका धर्म-संदेश बहुत ही योग्य व्यक्ति तक पहुँचा और वह भगवान के और विपश्यना के संपर्क में आ कर यथोचित लाभान्वित हुआ।

बिंबिसार ने भगवान की वाणी सुन कर प्रसन्नता व्यक्त की और तीन बार 'साधु, साधु, साधु' कह कर उनके चरणों में नमन किया।

सचमुच उसकी धर्म-मैत्री सफल हुई, सार्थक हुई। उसके मित्र का मंगल हुआ, कल्याण हुआ। ऐसा मंगल-कल्याण सब का हो!

कल्याण मित्र,

स. ना. गो.

(नये साधकों के लाभार्थ 'जागे पावन प्रेरणा' पुस्तक से साभार उद्धृत)

नए उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री रघुनाथ कुरुप, केरल

२. श्री रामस्वरूप ब्रह्मचारी, हैदराबाद, *धम्मविजय, विजयरायाई की सेवा*

३. श्री मोहनराज अडला, हैदराबाद, *धम्मनागज्जुन, नालगोंडा की सेवा*

४. श्रीमती सबरीना कटकम, हैदराबाद, *द. भारत के सहायक आचार्य की प्रशिक्षण-सेवा*

५. श्रीमती सुशीला गोयन्का, यांगों, म्यंमा, *म्यंमा के भारतीयों में धर्मप्रचार की सेवा*

६. श्री परसुराम गौतम, म्यंमा, *धम्म मकुट तथा धम्म रतन की सेवा*

7. Daw Win Kyi, *Myanmar*
To serve Dhamma Maṇḍala, Dhamma Maṇḍapa and Dhamma Mahimā

8. U Tin Maung Shwe, *Myanmar*
To serve Dhamma Maṇḍala, Dhamma Maṇḍapa

9-10. U Kyaw Khin & Dr. Daw Mya Mya, *Myanmar*
To organize AT meetings and workshops for trustees and Dhamma workers

11. Daw Sein Sein, *Myanmar*
To help in spread of Dhamma

12-13. Mr. Parker & Mrs. Laura Mills, *USA*
To serve Dhamma Maṇḍa, Mendocino, USA

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री सुशीलकुमार एवं श्रीमती वीणा मेहरोत्रा, वाराणसी, *धम्मचक्क की सेवा में क्षेत्रीय आचार्य की सहायता*

३. श्रीमती मनीषा मेहता, राजकोट

४-५. श्री हर्षद एवं श्रीमती हंसा पटेल, अहमदाबाद

६. सुश्री मीना टांक, अहमदाबाद

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

1-2. Mr. John & Mrs. Joanna Luxford, *UK*
To serve Europe including AT Training in Europe and European Long Course Centre

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री के. रविकुमार रेड्डी, एलूरु *धम्मखेत्त की सेवा में श्री बालकृष्ण गोयन्का की सहायता*

2. Mr. Van Shafer, *USA*
To assist Barry and Kate Lapping in serving Dhamma Pakāsa, Illinois

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्रीमती निर्मला दत्त, हैदराबाद

२. श्री के. नरोत्तम रेड्डी, हैदराबाद

३. श्रीमती कुसुम सोनी, भोपाल

४-५. श्री आनंद एवं श्रीमती Kerrin O'Brien Kulkarni, धर्मशाला

6. Mrs. Simin Sarmadi-Zokaie, *Iran*

7. Mr. Jack Siu, *Hong Kong*

8. Mr. Itai Brauer, *Israel*

9. Mr. Robert Wagester, *Canada*

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री मनोज बेंग्रुट, पुणे

२. श्रीमती संगीता शिंदे, पुणे

३. श्री अशोक चित्रकार, नेपाल

४. श्रीमती सूर्यमाया कंसाकार, नेपाल

५. श्री स्वोहित कंसाकार, नेपाल

६. श्री मोतीलाल खनाल, नेपाल

७. श्री नारायण कृष्ण खरेल, नेपाल

८. श्री ठाकुर ब्यास खत्री, नेपाल

९. श्री रामप्रसाद कोइराला, नेपाल

१०. श्री शिव कुवर, नेपाल

११. सुश्री रोसी महर्जन, नेपाल

१२. सुश्री मैया प्रधान, नेपाल

१३. श्री कृष्णदास राजकर्णीकर, नेपाल

१४. श्रीमती बीनू शाक्य, नेपाल

१५. श्री रूप कुमार शाक्य, नेपाल

१६. सुश्री ससु मयीं शाक्य, नेपाल

१७. श्रीमती विद्या शाक्य, नेपाल

१८. अनागारिका शांति, नेपाल

१९. सुश्री शोवा सिल्पक, नेपाल

२०. श्री कमलेश पिपलिया, दुबई

21. Mrs. Chuluuntsetseo Bataa, *Mongolia*

22. Mr. Udo Marquardt, *UK*

23. Mr. Greg Lundh, *Canada*

24. Mr. Jeff Miller &

25. Mrs. Rita Miller, *USA*

26. Mr. Farhad Radpour, *Iran*

27. Mrs. Emily Lo, *Hong Kong*

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08 **Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03**

धम्मपत्तन, ग्लोबल पगोडा के भीतर एक दिवसीय शिविर

आगामी बुद्धपूर्णिमा के शुभ अवसर पर २ मई, २००७ को ग्लोबल पगोडा के भीतर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। साधक भगवान बुद्ध की पावन धातुओं के सान्निध्य में तपने के सुयोग का लाभ ले सकते हैं। शिविर सुबह ११ बजे से सायं ५ बजे तक रहेगा। पगोडा साइट तक पहुँचने व अन्य जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें –**संपर्कः** श्री डेरेक पेगाडो, फोनः (०२२) २८४५-२१११/२२६१/१२०४/१२०६; टेलि-फैक्सः २८४५-२११२. Email: globalpagoda@hotmail.com; Website: www.globalpagoda.org

V **आचार्य स्वयं शिविर –** १६-११ से १-१२-००७. (धम्मगिरि एवं धम्म तपोवन में) आचार्य स्वयं शिविर के दौरान विद्यापीठ पूर्णतया बंद रहेगी। आगंतुक अतिथि केवल कार्यालय से संपर्क कर सकेंगे। इसकी पात्रता एवं नामांकन हेतु कृपया **भावी शिविर कार्यक्रम** देखें।)

धम्मगिरि पर **सहायक आचार्य कार्यशाला** :३ से ६-५-२००७. नामांकन हेतु संपर्क –व्यवस्थापक ,**धम्मगिरि**... से। (आचार्य एवं नव नियुक्त स. आ. के लिए)

सहायक आचार्य कार्यशाला, धम्मपुण्ण, पुणे

२३ व २४ जून, २००७ तक, केवल मराठी भाषी स. आ. के लिए। (कार्यशाला का संचालन केवल मराठी में होगा।) कृपया अपना नामांकन निम्न नाम-पते पर करायें – श्री भानुदास रसाल, मो. ९४२२०-००९०८, ईमेल- r_bhanudas@rediffmail.com अथवा पत्राचार द्वारा- **पुणे विपश्यना समिति**... *(कृपया भावी शिविर कार्यक्रम देखें)*

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टी.वी. पर **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियों को विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

पूज्य गुरुजी का प्रवचन 'हंगामा' टी.वी. चैनल पर

प्रतिदिन प्रातः ४:३० से ६ बजे तक पूरा प्रवचन एक साथ प्रसारित किया जा रहा है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित इसका लाभ उठा सकते हैं।

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे है।

दोहे धर्म के

देख पात्र की पात्रता, अल्प आयु लघु प्राण।
धर्म सिखाने स्वयं ही, पहुँच गए भगवान॥

उज्वल धातु-विभंग का, दिया धरम उपदेश।
सुनते सुनते कट गए, निज कर्मों के क्लेश॥

अनिल अनल जल भूमि का, हुआ व्योम में मेल।
जुड़ी चित्त की चेतना, चला नियति का खेल॥

प्रकट हुई छह इन्द्रियां, छह खिड़की यह द्वार।
अपने-अपने विषय का, होवे सतत प्रहार॥

सुखद-दुःखद संवेदना, विषय स्पर्श-संयोग।
देख अनित्य स्वभाव को, दूर किए भवरोग॥

अब ना जागे राग ही, अब ना जागे द्वेष।
कामलोक भव चक्र के, बंधन हुए अशेष॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

पुन्य उदय होवै इसो, बुद्ध समागम होय।
हुयां समागम बुद्ध स्यूं, धरम समागम होय॥

धरम समागम ज्यूं हुवै, खुलै ग्यान का नैन।
अन्तर को चेतो हुवै, सुण्या धरम का बैन॥

भीतर काया चित को, दीखण लगै प्रपंच।
छँटज्या बादळ मोह का, भरम रवै न रंच॥

तन मन जिभ्या कान का, नैन नाक का द्वार।
हुवै स्पर्स निज विसय को, प्रगटै भव संसार॥

स्पर्स हुयां वेदन हुवै, ह्वै अनित्य को बोध।
तो टूटै संसार क्रम, होवै चित्त विसोध॥

होवै दरसन सच्च को, जागै साचो ग्यान।
तो आपै परगट हुवै, परम सच्च निरवान॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोनः (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्सः (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५०, चैत्र पूर्णिमा, २ अप्रेल, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org